सच्चिदानंद राउतराय

Satchidananda Rautroy

श्री सची राउतराय, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपने सर्वोच्च सम्मान, *महत्तर सदस्यता*, से विभूषित कर रही है, ओड़िया के सर्वाधिक लब्धप्रतिष्ठ कवियों में से एक हैं। अपने उत्कृष्ट योगदान से आप पिछले सात दशकों से भारतीय कविता को समृद्ध कर रहे हैं।

ओड़िया साहित्य के स्तम्भ, डॉ. सच्चिदानंद राउतराय का जन्म 13 मई 1916 को ओड़िशा के पुरी ज़िले में खुर्दा के निकट गुरुगंज में हुआ। अपने विद्यार्थी जीवन में आपने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। आपने देशी राज्यों के विरुद्ध जनता के संघर्ष और छात्र तथा किसान आंदोलनों में भी भाग लिया। आम जन के प्रति आपकी प्रतिबद्धता ने जहाँ आपको पाठकों के मध्य लोकप्रिय बनाया, वहीं औपनिवेशिक शासकों को क्रोधित भी किया। आपको दो बार जेल जाना पड़ा और आपकी काव्यकृतियों—*रक्त शिखा* को 1939 में तथा *उठ जाग वोकी बंदी* को 1943 में प्रतिबंधित किया गया। प्रेस अधिनियम के अंतर्गत आप पर जुर्माना भी किया गया। राउतराय ने 1939 में स्नातक उपाधि प्राप्त की। 1952 में कोलम्बो योजना के अंतर्गत आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में तथा 1955 में आई.एल.ओ., जेनेवा में आपने औद्योगिक सम्बन्ध और समाज कल्याण में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

राउतराय बहुसर्जक होते हुए भी लेखन की गुणवत्ता के प्रति निरंतर सजग रहे हैं। *पाथेय* (1932), *पूर्णिमा* (1933), *बाजी राउत* (1938), *पल्ली-श्री* (1940), *पाण्डुलिपि* (1947), *अभिज्ञान* (1948), *हासंत* (1948), *स्वागत* (1958), *एशियार स्वप्न* (1969) और *कविता-1962, 1969, 1971, 1974, 1983, 1985, 1987* और *1990* सहित आपके 20 कविता-संग्रह प्रकाशित हैं। आपकी छह कथा-कृतियाँ प्रकाशित हैं, जिनमें उपन्यास *चित्रग्रीब* (1935) तथा नवीनतम *नूतन गल्प* (1990) सम्मिलित हैं। *साहित्य विचार ओ मूल्यबोध* (1972) और *आधुनिक साहित्यार केतेक दिग* (1983)-जैसी कृतियाँ ओड़िया साहित्यिक समालोचना की श्रेष्ठ कृतियाँ हैं। ओड़िशा के इतिहास और ओड़िया भाषा और साहित्य के क्षेत्र में, जयदेव और *रामायण* तथा *महाभारत*-जैसे महाकाव्यों पर आपने व्यापक शोध किया है। आपकी आत्मकथा का शीर्षक है—*उत्तरार कक्ष्य*। राउतराय की कृतियाँ अंग्रेज़ी, हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओं में अनूदित हुई हैं।

यद्यपि राउतराय ने ग्यारह वर्ष की अल्प वय में ही लिखना प्रारम्भ कर दिया और आपका पहला संग्रह 16 वर्ष की वय में ही प्रकाशित हो गया; तथापि 1939 में *बाजी राउत* नामक लम्बी कविता से आपको काफ़ी प्रसिद्धि

SRI Satchi Rautroy on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is one of the most outstanding poets in Oriya, whose excellent contributions have been enriching Indian poetry for seven decades now.

Dr. Satchidananda Rautroy, the doyen of Oriya writers, was born on 13 May 1916 at Guruganj near Khurda in Puri district, Orissa. In his boyhood days he took active part in the National Freedom struggle as also the struggles of the people of the Native States and student and peasant movements. His commitment to the people's cause endeared him to his readers while it also enraged the colonial rulers. He was twice imprisoned, and some of his books of poems were banned, *Raktasikha* in 1939 and *Utha Jaga Voki Bandi* in 1943. He was also fined under the Press Act. Rautroy graduated in 1939, had training in Industrial Relations and Social Welfare in Australia and New Zealand in 1952 under the Colombo Plan and in the I.L.O. Geneva, in 1955.

Rautroy has been a prolific writer, yet consistent in the quality of his output. He has 20 collections of poetry including *Patheya* (1932), *Purnima* (1933), *Baji Raut* (1938), *Palli-Sri* (1940), *Pandulipi* (1947), *Abhijnan* (1948), *Hasanta* (1948), *Swagata* (1958), *Asiar Swapna* (1969) and *Kavita—1962, 1969, 1971, 1974, 1983, 1985, 1987* and *1990.* He has also six works of fiction including the novel *Chitragriba* (1935), the latest of them being *Nutan Galpa* (1990). His works like *Sahitya Vichar O Mulyabodha* (1972) and *Adhunika Sahityara Keteka Diga* (1983) are masterpieces of Oriya literary criticism. He has also done extensive research in the history of Orissa, Oriya language and literature, in the works of Jaidev and in the epics, *Ramayana* and *Mahabharata.* His autobiography is titled *Uttarar Kakshya.* Rautroy's works have been widely translated into English, Hindi and other Indian languages.

Though Rautroy had started writing since the age of 11 and his first collection was published when he was just 16, what had brought Rautroy instant fame was the publication in 1939 of his long poem *Baji Raut,* commemorating the martyrdom of a 12-year old boatman boy who had fallen

मिली। यह एक 12 वर्षीय माँझी बालक की शहादत को समर्पित थी, जो ब्रिटिश राज के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान पुलिस की गोली का शिकार हुआ। इस कृति को एक लघु महाकाव्य के रूप में मान्यता मिली और समूची ओड़िया युवा पीढ़ी ने इस प्रसिद्ध कविता से प्रेरणा ली। हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने *बाजी राउत* और कुछ अन्य कविताओं का 1942 में अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित कराया, जिससे राउतराय को ओड़िशा से बाहर भी मान्यता मिली।

दूसरी कृति, जिसने राउतराय को साहित्याकाश में दृढ़तापूर्वक स्थापित किया, आपका कविता संग्रह *पल्ली-श्री* (1940) थी। इसमें ग्रामीण ओड़िशा के जीवन और समाज के बारे में कविताएँ हैं। ग्रामीण जीवन की अपनी स्वाभाविक सहजता और मनोहरता के बारे में अब तक लिखी गयीं कविताओं में ये कविताएँ आज भी श्रेष्ठ मानी जाती हैं। इन संकलनों और *अभिज्ञान* तथा *पाण्डुलिपि*-जैसे अन्य कविता-संग्रहों के प्रकाशन के साथ राउतराय ओड़िशा में आधुनिक और प्रगतिशील लेखन के अग्रदूत माने जाने लगे। 1955 में, मॉडर्न रिव्यू प्रेस, कलकत्ता ने *सची राउतराय : ए पोएट ऑफ़ द पीपुल* पुस्तक प्रकाशित की। इसमें हुमायूँ कबीर, डॉ. कालिदास नाग, वी. सत्यनारायण और एल.आर. श्रीनिवास आयंगर-जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लेख थे। इस पुस्तक से राउतराय को अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठा मिली और *जनकवि* की उपाधि हमेशा के लिए आपके साथ लग गयी।

राउतराय की उपलब्धियों में सबसे महत्त्वपूर्ण है—आधुनिक ओड़िया कविता को नया मुहावरा और नयी संवेदना प्रदान करना। आपकी *पाण्डुलिपि* (1947) इस नयी कविता की अग्रदूत थी और यह ओड़िया साहित्य में मुक्त छंद, गद्य-कविता और उच्चरित भाषा-जैसी शैलियाँ ले आयी। इस पुस्तक के विद्वत्तापूर्ण प्राक्कथन में आपने ओड़िया में नयी कविता का वास्तविक घोषणा-पत्र प्रस्तुत किया, जिसमें वाग-रीति द्वारा काव्यिका-रीति के स्थानांतरण की वकालत की गयी थी।

साहित्य, विशेषतः कविता के बारे में राउतराय के विचार आपके कविता-संग्रहों के उपसंहार में व्यक्त किये गये हैं। आपके कविता-संग्रह *कविता : 1962* (1962) में नयी कविता की भूमिका पर 200 पृष्ठों का एक परिशिष्ट है, जो कवियों के लिए सिद्धांत स्थापन करता है। आप स्वयं इस सिद्धांत के मुख्य व्याख्याता बने और नये कवियों की पूरी पीढ़ी को प्रेरणा देते रहे।

जैसे आपने कविता में नयी शैलियों का प्रयोग किया, वैसे ही उसमें विविध विषयों को भी ले आये। अपनी प्रारम्भिक कविताओं के स्वच्छंदतावाद से आप परवर्ती लेखन में सहज यथार्थवाद की ओर बढ़े। वस्तुतः यह प्रवृत्ति आपके प्रारम्भिक लेखन में भी देखी जा सकती है। ग्राम कविताओं की अपनी श्रृंखला में आपने न केवल शांतिपूर्ण और मनोहर ग्रामीण जीवन के गीत गाये हैं, बल्कि किसान-जीवन की कठिनाइयों और कष्टों को भी उजागर किया है। युद्धकाल के दौरान आपने हिटलर, बर्लिन, स्पेन पर कविताएँ लिखीं। बाद में भी आपने कोरिया, मुजीबुर्रहमान, याहया खाँ पर कविताएँ लिखीं, जो आपकी राजनीतिक समझ और समकालीन घटनाओं के प्रति आपकी प्रतिक्रिया की ओर इंगित करती है। राउतराय हमेशा जीवन और स्वतंत्रता और न्याय के पक्षधर रहे और एक ऐसे समाज की आशा की, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र और समान हो और गरिमा तथा विश्वास के साथ रह सके। आपने क्लर्क, दुकानदार, किसान—इन सामान्य लोगों पर भी लिखा है, लेकिन आपकी कविता प्रचारात्मक नहीं है। राउतराय

to police bullets during demonstrations against the British Raj. The book became a minor epic and a whole generation of Oriya youth drew inspiration from this celebrated poem. Harindranath Chattopadhyaya brought out an English translation of *Baji Raut* and some other poems in 1942 which gained Rautroy recognition outside Orissa too.

The other book which established Rautroy firmly in the literary firmament was *Palli-Sri* (1940), a collection of poems about life and society in rural Orissa. These poems are even today considered some of the best ever written about the native simplicity and idyllic charm of village life. With the publication of these and other collections of poems like *Abhijnan* and *Pandulipi*, Rautroy became the precursor of modern and progressive writing in Orissa. In 1955, Modern Review Press, Calcutta, brought out a book *Sachi Rautroy : A Poet of the People* with contributions from such celebrities as Humayun Kabir, Dr. Kalidas Nag, V. Satyanarayana and L.R. Srinivasa Iyengar. This book introduced Rautroy to an all-Indian audience and the epithet, *Poet of the People,* has clung to him ever since.

Foremost among Rautroy's achievements is the introduction of a new idiom and sensibility to modern Oriya poetry. His *Pandulipi* (1947) was the harbinger of this new poetry and brought to Oriya literature new forms such as *vers libre,* prose-poetry and the spoken language. In his learned preface to the book, he provided a veritable manifesto of new poetry in Oriya in which he advocated replacement of the *kavyika-riti* (literary voice) by the *vag-riti* (speaking voice).

Rautroy's views on literature, particularly poetry, have been expressed in his epilogues to his poetry collections. His collection *Kavita : 1962* (1962) has a 200-page appendix on the role of new poetry laying down a creed for poets. He himself became the chief exponent of this creed inspiring a generation of new poets.

Even as he experimented with new forms, Rautroy also tackled a variety of subjects in his poetry. From the romanticism of his early poems he progressed to the radical realism of his later writings. As a matter of fact, this trend was evident even in his earlier works; in his series of village poems, he had not only sung about the peaceful and idyllic rural life, but had also highlighted the trials and tribulations of the peasantry. During the war years he came out with poems about Hitler, Berlin, Spain. Later still, he has written poems on Korea, Mujibur Rahman, Yahya Khan, all pointing to his political sensibility and reactions to contemporary happenings. Rautroy has always stood for life and freedom and justice and has contemplated a society in which everyman is free and equal and lives with dignity and hope. He has written about the small man—the clerk, the shopkeeper, the peasant—but his poetry has not become propagandist. For Rautroy is primarily a poet and his poetry, even when advocating a cause or celebrating an event, has risen above the immediate through deep understanding, superb craftsmanship and subtle sensibil-

मूलतः एक कवि हैं और आपकी कविता, तब भी, जबकि आप किसी की वकालत कर रहे होते हैं या कोई उत्सव मना रहे होते हैं, अपनी गहरी समझ, उत्कृष्ट शैली और संवेदना द्वारा तात्कालिकता से ऊपर उठ जाती है। यहाँ तक कि सामान्य वामपंथी और अतियथार्थवादी पिष्ठोक्तियाँ आपकी कविताओं में आकर एक दुर्लभ लालित्य और काव्यात्मक शक्ति के साथ उत्कर्ष पाती हैं। वैयक्तिक भावनाओं और सामाजिक चेतना के सूक्ष्म सम्मिश्रण ने आपकी कविताओं को शक्ति और क्षमता प्रदान की है। नवीन बिम्बों और रूपकों के उपयोग ने आपकी कविता को अपने ही आकर्षण में रँग दिया है।

सची राउतराय को अपने साहित्यिक योगदान के लिए अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। पद्मश्री (1962) और ज्ञानपीठ पुरस्कार (1986) के अतिरिक्त आपको साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1964), सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (1965) और सम्भलपुर विश्वविद्यालय के भारत नायक पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। आप ओड़िशा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष (1978-1981), कलकत्ता में 1968 में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अध्यक्ष और 1988 में इसके राउरकेला सत्र के अध्यक्ष रहे। आंध्र प्रदेश और बरहामपुर विश्वविद्यालयों की मानद डी. लिट्. उपाधि के अतिरिक्त आपको *महाकवि* और *उत्कल रत्न* उपाधियों से विभूषित किया गया।

ओड़िया में कवि के रूप में आपके उत्कर्ष के लिए साहित्य अकादेमी, सची राउतराय को अपने सर्वोच्च सम्मान, *महत्तर सदस्यता*, से विभूषित करती है। □

ity. Even commonplace leftist and surrealist jargon is touched and elevated in his poems with a rare charm and poetic power. His subtle mingling of private emotions and social consciousness has given strength and power to his poems. The use of new images and metaphors have imbued his poetry with a charm all their own.

Satchi Rautroy has received several awards and honours for his literary contributions. Besides the Padmasri in 1962 and the Jnanpith award for 1986, he has received Sahitya Akademi award (1964), Soviet Land Nehru Award (1965), Bharat Nayak award of Sambalpur University (1988). He was also the President of Orissa Sahitya Akademi (1978-81), of the first All India Poets' Conference held in Calcutta in 1968 and of its Rourkela Session in 1988. He has also been honoured with the titles of *Mahakavi* and of *Utkal Ratna* besides honorary D. Litt. degree from the Andhra and Berhampur Universities.

For his eminence as a poet in Oriya, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Satchi Rautroy. □

Acceptence Speech

Satchidananda Rautroy

SRI Anantha Murthy, The President of Sahitya Akademi, Prof. Indra Nath Choudhuri, The Secretary of Sahitya Akademi, Ladies and Gentlemen.

Let me express at the very outset, my deep gratitude to the Sahitya Akademi, the National Academy of Letters for having nominated me a Fellow of the august body. It is a rare honour given to me and of which I am really proud. Sahitya Akademi is playing a yeoman's role in promoting the arts and literature of India. It deserves the heart felt compliments of all concerned.

The modern scene of Indian literature is indeed a picture of gloom and disappointment. The writer in general has to depend upon other sources for earning his livelihood. A creative writer can hardly support himself with the income from his books. He is compelled to be an employee in a Government office or in an Educational or business establishment. He is therefore bound to be compromising with the statusquo, with the existing values. A literature in order to be creative must be independent and have complete freedom—freedom from fear, exploitation, freedom of expression and faith but unfortunately the Indian writer today has become a slave of his circumstances, not a master of his destiny. The very existence and development of literature is threatened by many an outside agency such as the media. The sale of literature has gone down considerably and the cost of production of books has gone sky high. Therefore literature today is a good walking stick, but a bad crutch. In the circumstances Indian literature has failed to be the voice of the voiceless millions. It stands cut off and isolated from the main stream of national consciousness today. The contemporary milieu is full of dissensions and deformities for which the writer is not responsible. But he is the worst sufferer and victim of his circumstances. The contemporary scene reveals a rapid erosion of moral values as never before and a sordid picture of corruption and criminality running rampant everywhere.

The communication gap is the worst feature of the Indian literary world. India, a multilingual country, is divided by many linguistic barriers. The translation of the best works of language is the only viable means of transcending this barrier of language. Of course it is true that a literary work loses much of its original charm and the subtle nuances of words when it is transferred to another language but there is no alternative. Besides, great poetry does not lose much in translation. That is how we read and enjoy today the great works of Dante, Goethe, Pushkin, Rimband and others. The sensibilities of the Indian writers irrespective of language and place are almost similar, if not the same. The same impact of urbanisation, industrialisation and westernisation and also the same problems and predicaments inherited from the days of the freedom struggle, more or less shape the modern sensibility of the writers of India but without humanism no modern literature can be truly modern. All the three factors mentioned before were also articulated in fascist literature.

Modernity is not contemporaneity nor technical novelty as represented by aeroplane, nylon, plastic etc. The real culture or the gestalt of a nation contains the best elements of the past that defy time and are intermingled with the present. They determine the historical course of the future. Modernity is therefore not an isolated phenomenon. It is the historical development of tradition that still has relevance for the present and the future. The writers of India despite their linguistic and cultural diversity have identical patterns of outlook. Over and above, they have got a common mythology and a common cultural heritage which works as the greatest unifying factor among all literatures in India. Indian literature is therefore said to be one though written in many languages.

Lastly I thank you for the honour of the Fellowship bestowed upon me. I hope this will give me ample inspiration to continue my literary pursuits which I am still carrying on with full vigour notwithstanding the difficulties and physical handicaps caused by my failing eye-sight. Thank you again. □